

---

# Kalakutaharanartham Shiva Prarthana

---

## कालकूटहरणार्थं शिवप्रार्थना

---

### Document Information

---

Text title : Kalakutaharanartha Shiva Prarthana

File name : shivaprArthanAKAlakUTaharaNArthaM.itx

Category : shiva, shivarahasya

Location : doc\_shiva

Transliterated by : Ruma Dewan

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 13 | 410-424||

Latest update : April 28, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

April 28, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

कालकूटहरणार्थं शिवप्रार्थना



देवा ऊचुः -  
नमः शिवस्वरूपाय शिवायामिततेजसे ।  
सच्चिदानन्दरूपाय नमस्ते गिरिजापते ॥ ४१० ॥  
नमस्ते देवदेवाय सोमसूर्याग्निचक्षुषे ।  
सर्वाधिकाय शर्वाय नमस्ते सुखमूर्तये ॥ ४११ ॥  
नमस्ते सर्ववन्द्याय वेदवेद्याय शम्भवे ।  
नमस्ते शूलहस्ताय महादेवाय ते नमः ॥ ४१२ ॥  
निष्कलाय निरीहाय सर्वप्रत्यक्षसाक्षिणे ।  
नमस्ते निरवद्याय नमस्ते प्रत्यगात्मने ॥ ४१३ ॥  
नमस्ते गुणकूटाय नमस्ते गुणरूपिणे ।  
नमस्ते गुणसङ्गाय सङ्गहीनाय ते नमः ॥ ४१४ ॥  
नमस्ते निर्मलायेश महेश शशिशेखर ।  
नमस्ते जगतामीश निरीश परमेश्वरः ॥ ४१५ ॥  
सर्वान्तरात्मन्सर्वात्मन्सर्वरूप महेश्वर ।  
सर्वाधार निराधार नमस्ते विश्वरूपिणे ॥ ४१६ ॥  
भवान्शरणमस्माकं सर्वेषामपि शङ्कर ।  
न भवन्तं विनाऽस्माकमन्यच्छरणमीश्वर ॥ ४१७ ॥  
तवैव पादकमलमस्मच्चित्तमधुव्रतैः ।  
सर्वदा संश्रितं भूयान्महादेव कृपानिधे ॥ ४१८ ॥  
महेश तव सामर्थ्यं नास्माभिर्ज्ञायते विभो ।  
वेदैरपि न विज्ञातं सत्यं सत्यं न संशयः ॥ ४१९ ॥  
प्रलयानलसङ्काशः कालकूटोऽयमद्भुतः ।

त्वयास्मत्प्राणरक्षार्थं संहतः परमेश्वर ॥ ४२० ॥

कालकूटाद्भयं घोरं यत्त्वयाद्य निवारितम् ।

एतद्भयात्त्वदन्यत्र को वा पालयितुं क्षमः ॥ ४२१ ॥

अस्मत्तुल्यो नापराधसहिष्णुर्न त्वया समः ।

नास्मत्कृतापराधानां गणना पार्वतीपते ॥ ४२२ ॥

अगणय्याऽधुनास्माकमपराधान्वहूनपि ।

महेश कृतमस्माकं रक्षणं कालकूटतः ॥ ४२३ ॥

भवान्या कृतमस्माकमत एव भव त्वया ।

रक्षणं कृतमस्माकं कालकूटभयाद्भुवम् ॥ ४२४ ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते कालकूटहरणार्थं शिवप्रार्थना सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् उग्राख्यः सप्तमांशः । अध्यायः १३ । ४१०-४२४ ॥

- .. shrIshivarahasyam ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 13 . 410-424

..

Notes:

Deva-s देवाः, who were panic stricken at the manifestation of the Kālakūṭa कालकूट - the poison produced during the Churning of the Ocean (of Consciousness), eulogize Śiva शिव and appeal to Him to nullify the effects of the poison.

Encoded and proofread by Ruma Dewan

---

*Kalakutaharanartham Shiva Prarthana*

pdf was typeset on April 28, 2024

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

